JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

समकालीन महिला कथाकारों के कथा साहित्य में 'स्त्री–विमर्श''

शोधार्थी–आरती सिंह ठाकुर

महाराजा छत्रसाल विश्वविद्यालय छतरपुर म. प्र.

सारांश–

(हिन्दी कथा साहित्य में महिला कथाकार निरंतर अपनी योग्यता साबित करती आ रही हैं। महिला कथा कारों के कथा साहित्य में पारिवारिक, राजनैतिक,सामाजिक,धार्मिक,व्यक्तिगत आदि कई समस्याओं पर प्रकाश डाला गया हैं । इसी तरह स्त्री विमर्श भी महिला कथाकारों का मुख्य विषय रहा हैं। महिला कथाकारों के कथा साहित्य की नारी कामकाजी सशक्त बुराई के खिलाफ आबाज उठाने वाली और पुरूष से कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाली नारी है।मानव सभ्यता के इतिहास में स्त्री–अस्मितता उसके अधिकार और स्वतंत्रता का प्रश्न अत्यंत जटिल और उलझन पूर्ण रहा हैं।स्त्री को लेकर आज तक जितनी भी व्यवस्था रही है।प्रया सभी में स्त्री को दोयम दर्जे पर रखा गया हैं। पुरूष वादी सोच के सांस्कृतिक प्रतीको के 'अस्त्र' से स्त्री की स्थाई दासता को रचा गया है। सामाजिक व्यवस्था से मिला दोयम दर्जा,हीनता ,बौद्ध धर्म तथा सांकृतिक की रूढि गत मानयतायों के कारण अपने स्वा की आहुति दे परिवार की चक्की में पिसना ही स्त्री की पहचान है।)

पुरूष प्रधान सांकृतिक यानी पितृसत्तात्मक व्यवस्था मे कही भी स्त्री का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। सामाजिक संरचना नियामक पुरूष ने सारी व्यवस्था पुरूष मानसिकता को केन्द्र मे रखकर की बनाई और शास्त्रकारों ने संसार की समस्त दीनता और दुर्गुणता स्त्री पर आरोपित कर दिया और स्त्री को हासिये पर भोग्या बना दिया गया संसार के सभी धर्म शास्त्र मे भी स्त्री को कही भी पुरूष के समान स्वतंत्रता का बिधान नही है।

पुरूष प्रधान वर्ग अपने मानसिक विकारो से ग्रसित है फिर भी हम साहित्यिक रूप से 'स्त्री –विमर्श ' की बात करे तो स्त्री – विमर्श उस साहित्यिक आंदोलनो कहा जाता है। जिसमे स्त्री आस्मिता को केंन्द्र में रखकर संगठित रूप स्त्री साहित्य की रचना की गई हो।

''स्त्री–विमर्श ''का सामान्य अर्थ है 'स्त्री का स्त्री के बारे मे चर्चा करना' यहां बात हो रही है स्त्री को स्त्री की नजर से देखना यहां हर संदर्भ का केंन्द्र स्त्री होगी बहुत सारी चीजो में साझा और सम्लिन का भाव होगा बराबर की हिस्सेदारी होगी। स्त्री –विमर्श में संवेदनात्मक व्याख्या और भाषा का इस्तमाल होगा।स्त्री की द्रष्टि के साथ– साथ स्त्री के जीवन से जुडी समस्याओं की बात भी होगी स्त्री – विमर्श में स्त्री की भूमिका की पहचान करना साथ ही संसार की पडताल करना हैं और बिना भेद–भाव वाली स्त्री की दुनिया कैसी होगी यह देखने की कोशिश करना है।

भूमिका––

स्त्री –विमर्श को अंग्रेजी मे फेमिनिज्म कहा गया हैं, शुरूवात में इसके लिये नारीवाद या मातृ–सत्तात्मक शब्द प्रचलन में रहा।स्त्री –विमर्श बीसबी शताब्दी की देन है ''सीमोन द बोउबर'' की पुस्तक ''द सेकेण्ड सेक्स'' 1949 से माना जाता है। इसमें सीमोन कहती हैं कि स्त्रीयों को इस दुनिया मैं पुरूष की अपेक्षा दूसरे दर्जे पर रखा गया है इसके बाद मैरी एलमन की

पुस्तक '' थिकिंग ऐवाउट वीमन''1968 से भी स्त्री– विमर्श को वढ़ाबा मिला । 1968 के बाद एक क्रान्ति होती है जिसमें यह कहा गया कि अभी तक का जो साहित्य था वह पुरूषो के लिए लिखा गया अब साहित्य में स्त्री–विमर्श रहेगा।सुमन राजे का ''हिंदी साहित्य का आधा इतिहास''इसी क्रम मे लिखी गई रचना हैं।

विमर्श के इस दौर में स्त्री –विमर्श सावार्धिक चर्चित विषय है हिंदी साहित्य में लगभग दो–तीन दशक पहले से स्त्री –विमर्श पर चर्चा हो रही हैं।प्रचीन काल में भी स्त्रियों के बारे मे चर्चा होती रही हैं।ऐसा नही है कि साहित्यकारों ने या धार्मिक ग्रंथो में स्त्री को केंन्द्र नही बनाया है हमारे धर्म ग्रंथ मे कहा गया है कि–

यत्र नारी पूजयंते रमंते तत्र देवता ।

यत्रैतास्तु न पूजयंते सर्वस्तत्र; फला; क्रिया।।[1]

जहा स्त्रियों का आदर किया जाता है वहा पर देवता निवास करते हैं और जहा स्त्रियों का अनादर किया जाता है वहा पर प्रगति होना नामुमकिन हैं।इस पुरूष सत्तात्मक समाज में स्त्रियों को रीति रिवाज ,धार्मिक मान्यतायों,रूढीगत परम्पराओं और सामाजिक नियमों आदि से स्त्री को बाधकर रखा गया हैं। नारी को लक्ष्मी, दुर्गा,काली,आदि रूप देकर स्त्रियों को देवी बनाकर ,पूज्यनीय बनाकर उसको एक सीमा मे बांधकर रखा गया।स्त्री के मातृत्व,सहनशील कोमल आदि गुणों की बिशेषता बताकर स्त्री को एक निश्चित दायरे में रखने का प्रयास किया गया।जय शंकर प्रसाद ने नारी को श्रद्धा रूप में मानते है कामायनी में लिखा हैं।–

नारी तुम केवल श्रद्धा हो ,विश्वास रजत नग पग तल में।

पीयूष स्त्रोत सी वहा करो,जीवन के सुन्दर समतल में। [2]

महादेवी वर्मा का कथन हैं कि नारी का मानसिक विकास पुरूष के मानसिक विकास से अधिक द्रुत गति से होता हैं उसका स्वभाव कोमल होता हैं और प्रेम घृणा आदि भाव अधिक तीव्र व स्थाई होते हैं।इन समीतियों मे बस इतना ही अंतर है जितना बिधुत और घडी में एक मे शक्ति उत्पन्न होती है किंतु प्यास नही बुझाई जा शक्ति दूसरे से शक्ति मिलती है किंतु पशुबल की उत्पति संभव नही है। [3]

ऋग्वेद की बात करे तो चली आ रही परम्परा जिसमें स्त्रीयों कों भोग वासना की वस्तु के रूप में ही देखा जा सकता है परंतु आधुनिक समाज की बात करे तो परिवेश बदल रहा हैं स्त्रीयों के हक मे बात केवल स्त्रीया ही नहीं पुरूषों ने भी स्त्रीयों के हक मे आवाज उठाई।प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रा नन्दन पंत जी ने भी कहा है–

मुक्त करो नारी को,चिर वंदनीय नारी को।

युग युग की निर्मम् कारा से,जननी सखी प्यारी को ।[4]

सुमित्रा नंदन पंत जी ने नारी को मुक्त करने की बात क्यो की क्योकि नारी को जकड के रखने की जरूरत समझी गई और उसको जकडा गया। युग–युग से स्त्रीयों की सीमा बताकर उसको नियम परंपराओं आदि के दवारा स्त्री को चार दिवारी में बॉध कर रखा गया । स्त्री आखिर चाहती क्या है वह ना तो देवी बनकर पुजना चाहती है,ना लक्ष्मी बनकर घर की चार दिबारी मे बंद रहना चाहती हैं। वह तो केवल समाज मे सम्मान,समानता और सम्मेलन का भाव चाहती हैं।युग–युग से जो नारी का दमन किया जाता रहा है उसको केवल भोग की वस्तु समझा जाता रहा है इस व्यवस्था को बंद कर समाज में बराबरी का और सुरझा बा सम्मान चाहती हैं ।

कृष्णा सोबती के साहित्य मे स्त्री विविध रूपो मे अवतरित होती है यह रूप परंपरागत होता रहा है।उनमें उनमुक्त,अबला,विरहनी, विद्रोहणी,रूप भी सहज ही देखा जा सकता है।कृष्णा सोवती के वर्णित उपन्यासो में स्त्री चरित्र अपनी व्यथा से लेकर यौन इच्छाओं तक को सहज स्वाभिक रूप मे प्रस्तुत करती हैं।कृष्णा सोबती के महत्वर्पूण उपन्यासों मे स्त्री

चरित्र कई रंगो मे सम्मुख आते है यहा तीन पहाड' की जया है जो महत्वकांक्षी है किंतु पूरे आदर सम्मान के साथ अन्यथा मत्यु से भी उसे परहेज नही।'सूरजमुखी अंधेरे' के उपन्यास मे देव शोषण की शिकार रितिका है जो खंडित बचपन के कारण परंतु संवेदना हेतु स्नेह का ताप चाहती है।[5]

मन्नू भण्डारी जी की रचनाओं मे भी स्त्री–विमर्श रहा हैं। एक कहावत के अनुसार कहा गया है कि–स्त्री ही स्त्री की दुशमन होती हैं लेकिन में समझती हुँ कि ऐसा नही हैं स्त्री ही स्त्री के मन की थाह पा सकती हैं ,उसकी पीडा को दिल से महसूस कर सकती है ,उसके र्दद को भी अभिव्यक्त कर सकती है और यदि वह स्त्री साहित्यकार हो तो क्या फिर क्या कहना।

आपका बंटी उपन्यास में मन्नू भाण्डारी जी ने शकुन के जरिये एक स्त्री की झटपटाहट स्पष्ट दिखाई देती हैं ।जब शकुन के सामने अजय के हस्ताक्षर युक्त कागज रखे होते है –यह तो एक अध्याय था जिसे समाप्त होना था, और बह हो गया दस बर्षो का वैवाहिक जीवन एक झटके मे समाप्त हो गया यह वैवाहिक जीवन एक अंधेरी सुरंग मैं चलते चले जाने की अनुभूति से भी कम ना था।मन्नू भण्डारी की कहानी ''स्त्री–सुबोधनी'' में भी नायिका तीन भाई–बहनों की और बूढी मॉ की जिम्मेदारी उठाने बाली अविवहित नायिका का अपने बॉस से प्रेम प्रसंग पाठको को सोचने पर मजबूर कर देता हैं और किशोरियों व युवतियो को यह संदेश देता है कि भूलकर भी शादी शुदा आदमीयों के प्रेम में मत पढिए इस देश में प्रेम के बीच मन और शरीर की सोच भी स्त्री सुलभ हैं।मन्नू भण्डारी जी का सर्म्पूण साहित्य ''स्त्री–विर्मश'' का अंश वन चुका है।[6]

21 वी शदी में हिंदी आत्मकथा लेखन में बोल्ड लेखन से संबंधित लेखिका रमणिका गुप्ता,मैत्रेयी पुष्पा,मन्नू भण्डारी,प्रभा खेतान इत्यादि सभी आत्मकथा लेखिकाओं के आत्मकथा साहित्य में बोल्ड लेखन के लिए प्रसिद्ध हैं ये सभी लेखिकाए स्त्री के बिरूद्ध खडी सामाजिक कुरीतियों एवं अंतर –बाह्य आघातो की बाढ से उभरने के लिए संघर्षरत हैं।

नारी शिव शक्ति का रूप हैं वह मनुष्य जाति मे उर्जा प्रवाह का प्रमुख्य माध्यम हैं। जिसके बिना संरचना और आनंद की कल्पना नही की जा सकती भारतीय धर्म–शास्त्र मे देवी, मॉ,दुर्गा,शक्ति के माध्यम से नारी की महत्वता स्थापित की गई हैं। यह एक ऐसी शक्ति है जिसके बिना भविष्य की आशा नही की जा सकती और ना ही कभी संपूर्ण पोषण को प्राप्त किया जा सकता है। शुरूआती जीवन उत्पत्ति के समय रक्षा का एहसास बिना शक्ति के अधूरा है और साथ ही सांसारिक जीवन जीते हुए आंनद की कल्पना नही की जा सकती।[7]

समकालीन महिला लेखिकायों में मृदुला गर्ग,चित्रा मृद्गल,प्रभा खेतान ,मन्नू भण्डारी, अनामिका,सुधा सिंह आदि कई महिला लेखिकाए हैं जो अपने साहित्य लेखन के माध्यम से स्त्री वादी आनदोलनों को बढावा देती आ रही हैं प्रभा खेतान अपने उपन्यास ''उपनिवेश मे स्त्री''में लिखती है–''स्त्री के अधिकारों की चर्चा करने पर पूछा जाता है कि वह किस राष्ट्र की नागरिक हैं उसका धर्म ,उसकी जाती, उसका सम्प्रदाय क्या है इन सबालों का जबाब यह हैं कि नारी वाद को राष्ट्रीय सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता ।''[8]

आज कल सारी दुनिया में नारीवाद लोगों को चौका रहा हैं। औरत की आजादी के आंदोलनों को नाना प्रकार की प्रतिक्रियाओं का सामना करना पड रहा है।पेरू,चिली,नमीविया,बांग्लादेश,केन्या,रूस,पूर्वी यूरोप आदि जगहो पर चर्च और हिंदु परंम्परा वादीयों की नजरों मे नारीवाद अनैतिक आचरण का पर्याय है। जमीन से जुडे आंदोलनों के अनुसार विशेषकर पूर्वी यूरोप के वामपंथी के अनुसार नारीवाद एक बुजु या बिचार हैं स्त्री अधिकारों के प्रर्वतक समर्थको के एक हिस्से ने भी नारीवाद को खरिज कर दिया गया ।[9]

रेखा कस्तवार जी कहती हैं स्त्री–विमर्श का प्रमुख सरोकार स्त्री का अपने पक्ष में खुद लडना खुद खडे होना रहना हैं।जब तक लडाई अपनी ओर से नही लडी जायेगी स्तरीय चिंतन कि चुनौतियां निश्चित रूप से हिंदी के स्त्री विमर्श में कतिपय अवधारणात्मक परिर्वतन लाने में सफल होगी ।[10]

समकालीन महिला उपन्यासकारों ने मैत्रेयी पुष्पा का नाम अग्रणीय रहा है। मैत्रेयी पुष्पा प्रतिभा सम्पन्न उपन्यास कार है लेखिका ने नारी चरित्र के आंनतरिक वा व्रह और उसके मानवीय जीवन **दृष्ट** के आलोक में' यर्थात् के धरातल पर परखा है।मैत्रेयी पुष्पा नारी का दुख दर्द संताप पीडा संवेदना रूढ व्यवथा की दास्तान पुरानी परंम्परा और शोषण की शिकार तथा उसकी में कसमसाती हुई संवेदन शील नारी का प्रमुख्य अंकन अपने प्रमुख उपन्यासो में किया है।मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासो चाक,अल्मा

कबूतरी,इदं नं ममं, आंगन पंछी,बेतवा बहती रहे,आदि में महिला नायिकायऍ पुरानी रूढियो,परंम्पराओं,शारीरिक,मानसिक,शोषण तथा कुरीतियों के खिलाफ संर्घष करती नजर आती है।[11]

अनामिका जी ''स्त्री–विमर्श''की प्रबल व्याख्याता ,बेहतरीन कवियित्री, आलोचक के रूप में आती हैं।उनका स्त्री विमर्श बहुत ही वेवाक और गहन अध्ययन है।आनामिका जी की कवितओं में भारत की महिलाए किन–किन समस्याओं को लेकर चिंतित और परेशान हैं।यह समझने में मदद मिलती हैं।अनामिका जी के स्त्री–विमर्श में विविध रूप देखने को मिलते हैं। जिसमें व्यक्तित्व परिक्षेप में स्त्री,समाजिक परिक्षेप में स्त्री,परंपरागत और आधुनिक के परिक्षेप में स्त्री,अनामिका जी अपनी कविताओं में ''मैं'' का प्रश्न उठाती हैं। अनामिका जी अपनी कविताओं के माध्यम से स्त्री के व्यक्तित्व का महत्व किंन्ही महान उपलब्धियों को प्राप्त करने में नही बल्कि एक मॉ के तौर पर आत्म–त्यागी बलिदान के रूप में स्वीकार करती हैं उनकी कविताएं बेहद बौद्विक और दार्शनिक हैं उनकी कविताओं में औरत एक छोटी लडकी की उम्र से लेकर बूढे होने तक अपने स्वा की तलाश करती रहती हैं।इन कविताओं के माध्यम से औरत को दुनिया को समझने ,उनकी मानसिकता को बोलने और उनकी अंतरिक्ष को रचने का कोशिश करती हैं।अनामिका इतिहास पौराणिक गाथाओं से लेकर आधुनिक परिक्षेप में स्त्री की स्थिति की निष्पक्ष जॉच करती हैं इनकी कुछ कवितायें इतनी गम्भीर हैं।जो पाठक को भाव विभोर होकर सोचने पर मजबूर कर देती हैं। चौदह बर्ष की दो सेक्स–वर्कर्स,वृद्धाये धरती का नमक, भीख मागते बच्चो का वर्णन,आदि।[12]

अनामिका जी अपनी कविता ''तुलसी का झोला''में तुलसीदास जी को कटघरे में खडा करते हैं –

सदियों तक किया मैनें इंतजार,

आयेगा कोई तोडेगा टाके गूदड के।

ले जायेगा मुझको आके ,

पर तुमने तो पा लिया था राम रतन,

इस रत्ना की याद आती क्यो।

इस कविता के माध्यम से परित्याक्ता पत्नि रत्ना अपने पति को याद दिलाना चाहती है कि वह रात भी घन धमंड वाली है जब तुम मिलने के लिए आए थे और सदा के लिए मुझे छोड कर चले गए। रत्ना कहती है कि तुमने सीता राम की गहराईओं को पा लिया पर यह नही समझ पाये की एक स्त्री के लिये मायका घर नही होता।[13]

महिला उपन्यासकारों की बात हो और मृणाल पाण्डे का नाम ना आए तो बात अधूरी सी लगती हैं मृणाल पाण्डे के उपन्यासों मे पटरांपुर,रास्तो पर भटकते हुए,देवी उपन्यासों में नारी चेतना के स्वर को प्रखर किया हैं।उनके अनुसार आज का नारी लेखन हमारी मानसिक द्रष्टि के समान हैं नारी शोषण के विरूद्व हैं।

भारतीय परंमपराओं में राजनैतिक,सामाजिक,आर्थिक ,सांस्कृतिक ,आदि सभी जगह पर पुरूष वर्चस्व को स्थापित किया हैं।अपनी सत्ता स्थापित करने में पुरूष और स्त्री को माध्यम के रूप में इस्तमाल किया ।साहित्य जगत में भी पितृसत्तात्मक इस परंपरा ने अपना परचम लहराया, पुरूष द्वारा दिखाए गये रास्ते पर चलती हुई स्त्री जब साहित्य में परंपरागत आदर्शो को मानती रहती है तो आलोचक उसे स्वीकार करते हैं। स्त्री जब वेबाकी से अपने अनुभवों के लिए लिखती है अपने अधिकारो के खडी होती है तो उसके लेखन को उच्छक्ष्खल कहकर हाशिए पर धकेल दिया जाता है।[14]

ऐसा नही है कि स्त्री विमर्श केवल स्त्रीयों के द्वारा ही लिखा गया है या लिखा ला रहा हैं पुरूषो के द्वारा भी स्त्री विमर्श लिखा जाता है।पुरूष भी स्त्री के अधिकारों और हक की बात करते हैं राजेंद्र यादव जी कहते है कि–''दुनियां अगर चार पहाडों के बोझ तले पिस रही हैं तो औरतो पांच पहाड के नीचे और पॉचवा पहाड है पुरूष सत्तात्मक विधान का है।''[15]

समकालीन स्त्री चिंतन का बिषय हैं स्त्री जीवन की समस्याओं एवं दलन के अनुभवों की अभिव्यक्ति नारी वाद पारस्पारिक ज्ञान और दर्शन की चुनौती देता हैं नारी वाद एक ऐसा विचार है जो कि पुरूष और स्त्री के मध्य समान चुनोतियों को स्वीकार कर नारी के सबलीकरण की प्रक्रिया को बौद्धिक व क्रियात्मक रूप से प्रस्तुत करता हैं।नारीवाद एक विचार धारा भी हैं और

एक आंदोलन भी नारीवाद के सिद्धात के अंतर्गत मूल रूप से समानता ब सबलीकरण के माध्यम से महिला व पुरूषो के मध्य व्याप्त असमानता को नकारना हैं।

निर्कष ––वर्तमान स्थिति बहुत कुछ सुधरने के बाद भी स्थिति उतनी जंघम बनी हुई हैं बाहरी आवरण की बात करे तो परन्तु, जो आन्तरिक आवरण है वह पुरूष प्रधान जीवन की अभिव्यक्ति करता है ।स्त्री–विमर्श में समकालीन महिला रचनाकारों ने अपने कथा साहित्य के व्यापक परिदृश्य में ना केवल पुरूष को चुनौती दी हैं अपितु समाज परिवार और विशेषत; नारी जीवन में आने वाली विभिन्न समस्याओं को अपनी दृष्टि से उद्घाटन करने का प्रयास किया और इस संदर्भ में यदि हम देखे तो इस बात की ओर अपने पाठको का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया कि साहित्य के केंन्द्र में स्त्री हमेशा से थी ऐसा नहीं है कि पुरूष रचनाकारों ने उसको विषय वनाकर अपने साहित्य में ना लिखा हो किुन्तु वह लेंखन वही तक सिमित था ।जहॉ तक पुरूष चाहता था, जितना पुरूष चाहता था ।

महिला रचनाकारों ने उस से उपर उठकर उसके जीवन की सूक्ष्म से सूक्ष्म समस्यायों को उसके ह्रदयगत मनोभावों को हमारे सामने लाने का प्रयास किया।विगत कुछ दशको मे नारी संबंधी अध्ययनों का सैद्धांतिक वा भावात्मक पक्ष प्रबल हुआ।वर्ग व्यवस्था की विवेचना की तरह नारी से संबंधित अध्ययन का एक विषय से जुडना तथा उसे विषय गत सीमाओं में बांधना अनुचित अवतार प्रतीत होता है, तथापि इसमें स्त्री अध्ययन की प्रवृति का विस्तार हुआ हैं। स्त्रियों की स्थिति,उनकी भूमिका, समाज में स्त्रियों का योगंदान अत्यंत ही महत्वपूर्ण हैं।वर्ततान परिस्थिति में नारी विभिन्न तरीके से अपनी बात प्रस्तुत कर रही है।और लिख भी रही हैं।
स्त्री–विमर्श वास्तव में वह विचार धारा हैं जिसमें स्त्रियां रूढीवादी परंपरा,मानयता, अंधविशवास और स्त्री को जकडने वाले पुरूष सत्तात्मक सोच के खिलाफ आवाज उठाना हैं।स्त्री–विमर्श का मतलब यह नहीं हैं।कि पुरूष से विरोध हो या स्त्री यह भी नहीं चाहती कि मातृसत्ता चले,स्त्री तो समाज में बस साझेदारी और सम्मेलन का भाव चाहती हैं।

स्त्री विमर्श का अर्थ पितृ–सत्तात्मक मनोसंरचना का त्याग कर स्त्री–विमर्श का आकादमिक होना तथा अपनी जातीय अस्मिता की पहचान कर स्त्री की देह मुक्ति की बात करना हैं । मध्य वर्गीय स्त्री का पूरा संघर्ष दैहिक स्वातंत्रता से लेकर आर्थिक स्वातंत्रता तक सिमटा हुआ हैं।सुधा सिंह के अनुसार यदि स्त्री की कोई शैली हो सकती है तो वह आत्मीय शैली है ''नारी–विमर्श पर लिखने में नारी की लेखन आत्मीयता परक और पुरूष का लेखन बौद्धिकता परक रहा है।परन्तु अभिव्यक्ति यथार्थ ही रही हे।''

आज के युग में स्त्रियां हर क्षेत्र के अपनी योग्यगता को साबित करती आ रही हैं आज हर क्षेत्र में नारी का वर्चस्व होता जा रहा हैं ।राजनैतिक,चिकित्सा,बैंक, सामाजिक कार्य,महाविद्यालय,सेना ,अंतरिक्ष यात्री,लेखन आदि क्षेत्र में अपनी कार्य कुशलता से हर क्षेत्र का विकास कर रही है। आज नारी हल चलाने से लेकर प्लेन उडाने तक का काम बढा ही कुशलता से करती हैं। समाचार पत्रो के माध्यम से और सोशल मीडिय की भूमिका भी राष्टीय स्तर पर बहुत कुछ सुधार हुआ है, लेकिन आंतरिक रूप से महिलाओ की स्थिति में अभी भी बहुत सुधार की जरूरत हैं ।आज महिलाओं को शिक्षा तो दी जा रही हैं लेंकिन सुरक्षा नही।स्त्रीयों को आज भी घर में तथा समाज में मानसिक रूप से स्वतंत्रता का अधिकार नहीं हैं आज जब रात में दस बजे घर से निकली लडकीयों का यह विश्वास नहीं हैं। कि वह सुरक्षित घर लौटेगी की नहीं तो इस स्थिति में महिलाओं का समाज मै क्या स्थान हैं यह अंदाजा लगाया जा सकता हैं।

स्त्री–विमर्श पर जयशंकर प्रसाद,सुमित्रा नंदन पंत मैथलीशरण गुप्त ,प्रेमचंद्र जैनेंद्र आदि कई पुरूष लेखको ने लिखा लेकिन''नारी विमर्श पर लिखने में नारी का लेखन आत्मीय परक और पुरूष का लेखन बौद्धिक परक रहा परंतु अभिव्यक्ति यर्थाथ ही रही''।

समकालीन महिला उपन्यास कारों ने स्त्री विमर्श को एक आंदोलन के रूप में देखा हैं स्त्री विमर्श से संबंधित अधिकतर उपन्यास नारी द्वारा ही लिखे गये। इन उपन्यासों में स्त्री विमर्श से जुडे सभी पक्षो को उजागर किया गया हैं। अब तम हमे यह प्रयास कुछ महिला लेखिकाओं जैसे–मैत्रेयी पुष्पा,सुधा अरोडा,चित्रा मुद्गल,आदि रचनाकारों में देखने को मिलता है।

मत करो मेरा विश्लेषण,

मेरी त्वचा की रंगत का

शारिरिक सौष्ठव का

दैहिक सौंदर्य से परे

प्रतिभा भी हूँ

क्षमता भी हूँ

हॉ!स्त्री हूँ मै!!!!

संदर्भ––

1 मनुस्मृति, अध्याय 1

2 जय शंकर प्रसाद ,कामायनी प्रकाशन

3 महादेवी वर्मा,श्रृखला की कडिंया–राधा कृष्ण प्रकाशन

4 सुमित्रा नंदन पंत,युगवाणी

5 कृष्णा सोबती,सूरजमुखी अंधेरे के,राजकमल प्रकाशन1972

6 मन्नू भण्डारी , आपका बंटी–राधा कृष्ण प्रकाशन 1979

7मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासो मे नारी संवेदनर और यर्थाथ,संजय कुमार

8 प्रभा खेतान, उपनिवेश मे स्त्री ,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली 2003

9 प्रभा खेतान,उपनिवेश मे स्त्री,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली 2003

10 रेखा कस्तवार ,स्त्री चिंतन की चुनौतियां

11 मैत्रेयी पुष्पा,त्रिया हठ ,किताब घर प्रकाशन 2006

12अनामिका की कविताओ में स्त्री विमर्श,सुनिता बिष्ट,

13 अनामिका ,दूब–धान,पृ021भारतीय ज्ञानदीप पीठ प्रकाशन,प्र0स02008

14 प्रभा खेतान, स्त्री विमर्श

15 राजेंद्र यादव,आदमी की निगाह मैं औरत,राजकमल प्रकाशन,2001